

नेतृत्व सिद्धी लिंगशाला, भारत संसाधन विकास मंडल, भारत सरकार द्वारा अदिनी भाषी देश में हिन्दू के प्रचार-प्रसार के लिए अधिकृत प्रशिक्षा

नव बिक्ष

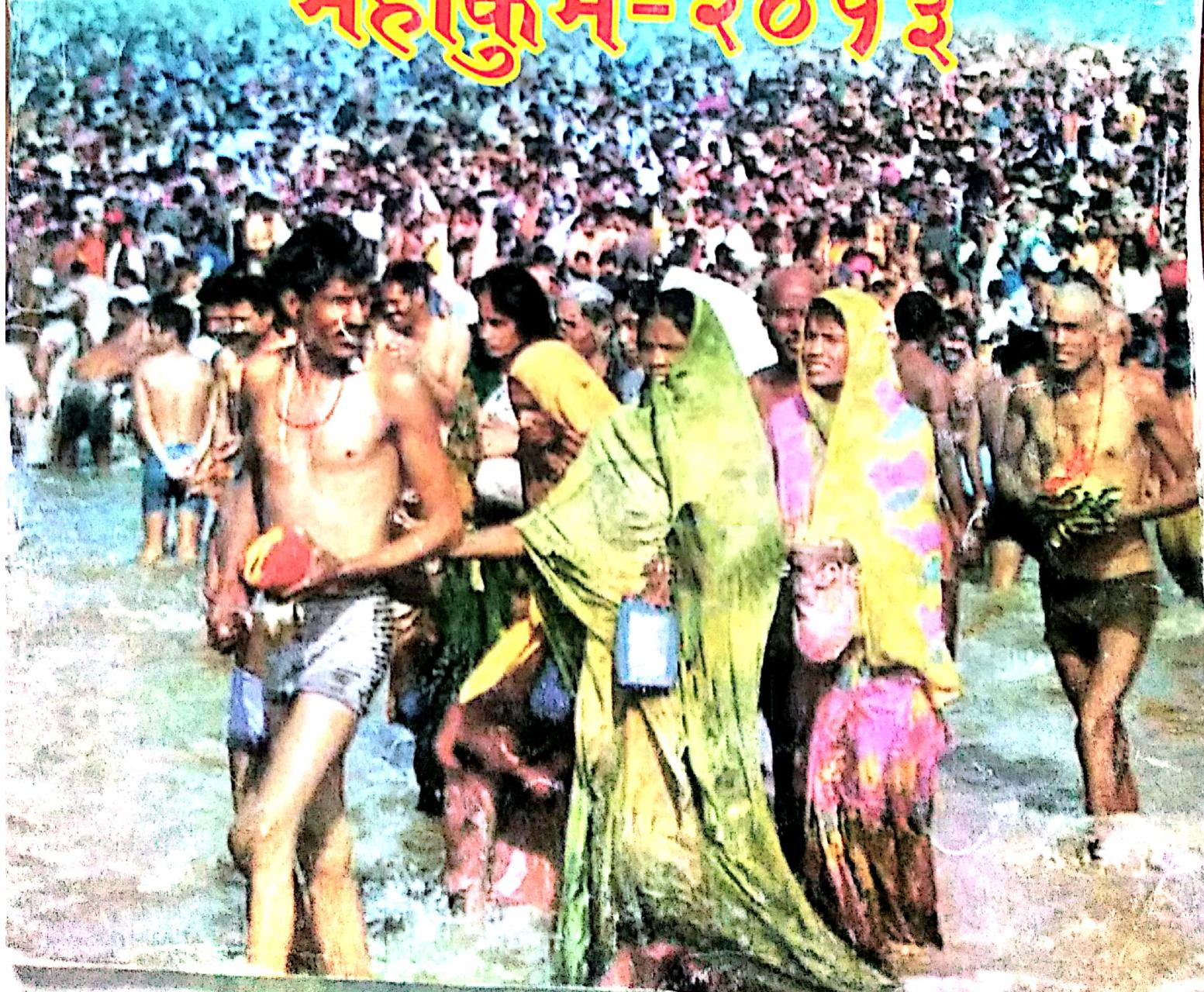
हिन्दू राधित्य के नव उल्का, नव संचितना
जौर नव आत्मोद्ध की प्रतिमेषि पाराकी

वर्ष-४, अंक-७

जनवरी, २०१३ पौष-माघ वि. शुक्ल २०६९

मूल्य-₹१५

महाकुम्भ-२०१३



नव निकष

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संचेतना
और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

वर्ष-६, अंक-७, जनवरी, २०१३ पौष-माघ वि.संवत् २०६९

इस अंक में

3. आत्मनेपद

कुम्भ पर्व पर विशेष

- 5. को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ
- 8. त्रिवेणी अष्टकम्
- 9. कुम्भ पर्व और प्रयाग
- 10. स तीर्थराजो जयति प्रयागः

असहमति

11. आखिर क्यों कर हो अतीत वर्तमान में प्रासंगिक
शोधलेख (परिशिष्ट शोध विशेषांक)

- 17. शांता काव्य का आधुनिक भावबोध
- 19. चन्द्रसेन विराट के गीतों में व्यक्त राजनीतिक स्वर
- 22. 'अरुन्धती' में वर्णित सत्ताधीश और संत के मानस
संघर्ष का मनोवैज्ञानिक विवेचन
- 25. रश्मिरथी : समकालीन दौर में प्रासंगिकता
- 28. सूर्यबाला के उपन्यासों में नारी-विमर्श
- 33. मिथिलेश्वर की कहानियों में नारी विमर्श
- 36. ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों का कथ्यपरक अनुशीलन

कृति-संदर्भ

- 42. राजनीति और मीडिया का निर्मम दस्तावेज़ : वृंदा : गाथा सदी की
- 45. तीसरे मन को छूती कविताएँ
- 48. नारी के शोषण-अत्याचार और स्वावलंबन की कहानियाँ

आलेख

- 49. प्रभा खेतान के काव्य में नारी-चित्रण
- 53. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में मानवीय चेतना

त्वरित प्रतिक्रिया

- 55. नेता और नौकरशाह के रास्ते पर मीडिया

तुलनात्मक साहित्य

- 56. 'बादल को घिरते देखा है' और 'मेघदूतम्'

पुस्तक समीक्षा

- 60. भावना के मंच पर खिला नीलकमल
- 61. समीक्षा के नये आयाम

संदर्भ : संचार पत्र

- 62. सूचना माध्यम और महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध : कारण और अन्तर्विरोध-डॉ० संजीव कुमार जैन

शोधलेख

- 68. 'बलचनमा' की जनचेतना आंचलिकता का अतिक्रमण
- 70. समकालीन कवयित्रियों की नारी विषयक दृष्टि

कविताएँ / ग़ज़ल

- 74. रामकिशोर मेहता, शिवसागर शर्मा, प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, साहिल
- 46. डॉ० रामदुलारेलाल पाठक, अमित तिवारी

-डॉ० प्रमिला अवस्थी

-मीना पाण्डेय

-डॉ० कंचन पाण्डेय

-आशीष पाण्डेय

-राजेन्द्र सिंह गहलौत

-डॉ० शेख अब्दुल वहाब

-रेखा विठ्ठलराव देवरे

-श्रीमती सद्भावना शुक्ला

-डॉ० गीता सिंह

-पवन अशोक विस्पुते

-किरण प्रवीण राव निकम

-मनोज नामदेव पाटील

-सुरेश पंडित

-शुभदा पाण्डेय

-मोहम्मद आरिफ

-प्रह्लाद विजया सिंह पावरा

-डॉ० चन्दा देवी

-श्री कल्याण चन्द्र चौबे

डॉ० शिवशंकर मिश्र

-डॉ० बालेन्दुशेखर तिवारी

-प्रो० (डॉ०) शरदनारायण खर

-दीपा पाण्डेय

-डॉ० कामिनी तिवारी

प्रभा खेतान के काव्य में नारी-चित्रण

1. नारी-चित्रण- उत्तरशती के हिन्दू साहित्य में महिला लेखन की अहम भूमिका रही है। इसके फलस्वरूप जो स्त्री जीवन, हाशिए पर था, परिधि में आ गया है। नारियों द्वारा स्त्री जीवन के अनेक सवालों, समस्याओं का चिन्तन, मनन, अध्ययन एवं लेखन किया गया है। समकालीन महिला साहित्यकारों में प्रभा खेतान का विशिष्ट स्थान है। वे एक सवेदनशील कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार, चिन्तक, अनुवादक, संपादक तथा आत्मकथाकार हैं। स्त्री जीवन उनके साहित्य का केन्द्र बिन्दु रहा है। उनके साहित्य में नारी जीवन के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं।

स्त्री बेटी, पत्नी और माँ के रूप में पुरुष का पिता, पति और बेटे के रूप में सहायता प्राप्त करती है उनमें स्नेह बढ़ोतारी करती है। “पत्नी अपने आत्मसमर्पण और निश्चल प्रेम द्वारा पुरुष के जीवन में अनंत रस का संचार करती है और उसकी प्रेरणा बनती है। माता के रूप में वह ममतामयी पुत्र के लिए अखण्ड सौभाग्य की कामना करती है। पुत्री का महत्व तो स्वयं निर्धारित हो जाता है, क्योंकि इसी के विकसित रूप है— पत्नी और माता।”

महादेवी वर्मा के शब्दों में— “पुरुष के द्वारा नारी का चित्रण अधिक आदर्श बन सकता है। परन्तु अधिक सत्य नहीं, विकृति के निकट पहुँच सकता है, परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं, पुरुष के लिए नारीत्व कल्पना है। परन्तु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेंगी वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरान्त भी शायद ही दे सके।” अर्थात् नारी के आर्थिक एवं सामाजिक आयामों का विवेचन निम्न तरह से देखा जा सकता है।

2. आर्थिक आयाम- व्यक्ति, समाज और राष्ट्र आर्थिकता से ही परिचालित रहता है। इसलिए अर्थ को सर्वोपरि मानते हुए साहित्य को केन्द्र में रखकर निरूपण किया गया है। प्रभा जी के काव्य रचना में आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है।

आर्थिक विषमता से मानवी समाज व्याप्त रहा है। एक ओर उच्च वर्ग है तो दूसरी ओर निम्न वर्ग है। एक ओर अमिट व्यक्ति है तो दूसरी ओर अपनी भूख मिटाने के लिए संघर्ष करने वाला आम आदमी है। प्रभा जी से अपनी कविता ‘मंथन’ में इसी विषय को उभारा है। अमीर व्यक्ति तो कीमती वस्तुओं का लोभी एवं ग्राहक रहता है—

कीमत तो सभी की / आँक ली जाती है

चाहे वह बाटे का जूता हो /

या फिर पिकासो को पेंटिंग /

-प्रहलाद विजयसिंह पावरा

उद्योगपति अरबों का मालिक है /
और सड़क किनारे पत्थर तोड़ने वाला /
दो पैसों का।

जिस तरह समुद्र मंथन के समय उद्देश्य रूप को देखा जाये तो वह केवल लाभ एवं स्वार्थ ही है। दानवों में आर्थिक प्राप्ति को लेकर युद्ध चला है। विश्व में रूपया पाउण्ड और डालर राज कर रहा है।

विष्णु मोहिनी रूप धरे

पिला रहे डालर, पाउण्ड और रूपया।

अरब देशों में भारत में रहने वाले बहुत से लोग नौकरी एवं व्यवसाय करने गये हैं, जा रहे हैं। अरब देश पेट्रोल के भण्डार के कारण तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है। उस देश में नव-निर्माण कार्य भी बड़ी तेजी से गतिशील हैं। भारतीय मजदूर को यहाँ की तुलना में अधिक मजदूरी प्राप्त होती है। इसी कारण वंश दिन-ब-दिन स्थलांतरण हो रहा है। ‘हुस्नाबानों’ कविता में चित्रित हुस्ना के पिता भी दुबई गये हैं। नायिका हुस्ना के शब्दों में—

हाँ नारी / जानती हो तुम /

अब्बा गये हैं दुबई / अब्बा गये हैं हवाई जहाज से।

मजदूर दूसरों के लिए भव्य महल निर्माण करना यही एक त्रासदी रही है। वे खुद बेघर हैं। समाचार-पत्र कहाँ से छपते हैं? यह सवाल हुस्ना के मन-मस्तिष्क में आता है। छोटी उम्र की हुस्ना को यह ज्ञात नहीं कि घर निर्माण करने के लिए प्रमुखता से आर्थिक समस्या ही होती है। इसलिए वह अपनी उम्मी से सवाल पूछती है, ‘उम्मी उम क्यों नहीं बना देती एक ऐसा छोटा-सा घर जिसमें मोहसिन, अब्बा, हम और तुम रह सकेंगे।’ आर्थिक अभाव के कारण इसी गली में उनका एक छोटा-सा मकान था जिसकी मरम्मत नहीं हो सकी-

चार दीवारों में बदलकर / दीवारें भी हो गई

केवल ईटों की भीड़ / ईटों को चाट रहे दीपक।

आम आदमी के लिए मकान का अर्थ है रहने की जगह। उनका सपना भी यही है—

अपना घर / थकता हुआ आदमी

बैठना चाहेगा कहीं / दुखती हुई पीठ

टेक चाहेगी कहीं।

यह नारियाँ आर्थिक विवशता के कारण मकान मालिकों की डॉट-फटकार सुनती हैं। किन्तु अपनी मधुर बातों से उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करती हैं। जैसे मकान मालिकों को रत्ना कहती हैं—

दर हो गयी मेम साब / अभी सल्टाती हूँ काम
बनाती हूँ चाय / उठाती हूँ बिस्तर

बाबा को सम्हाल लूँगी मेम साब / आप न करें फिकर।¹

कवयित्री ने अपनी कविता 'बहुत मुश्किल है' में अपनी संवेदना उस भीख माँगने वाली स्त्री के प्रति व्यक्त की है, वह भीख माँगकर जीवन जी रही है। आर्थिक विवशता के कारण उसे बसंत के मौसम में कोई रुचि यह स्पष्ट है कि कवयित्री की संपूर्ण संवेदना उस निम्न वर्ग की कामकाज करने वाली स्त्रियों के प्रति है जो अमीर लोगों के घर में दिन-रात अथक काम करती हैं।

2. सामाजिक आयाम- रचनाकार का यह कर्तव्य है कि वह समाज के विभिन्न समस्याओं को व्यक्त करे। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। इसलिए साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं उसका मार्गदर्शक भी है। डॉ कामिनी तिवारी के शब्दों में- "नारी सामाजिक जीवन का सर्वप्रथम अंग है। वह परिवारिक व्यवस्था का समर्पण भाव से नियमन करती है। परिवार समाज की एक प्रमुख इकाई होने के कारण सामाजिक में नारी की महत्ता एवं अर्थवृत्ता विशेष उल्लेखनीय है। समकालीन कवयित्रियों ने नारी समाज के विविध पहलुओं का गहनता से चित्रण किया है। जिसमें नारियों की सुखद एवं दुःखद स्थितियाँ उद्घाटित हुई हैं।"¹²

कवयित्री ने अपनी रचनाओं में स्त्रियों की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है। उनके काव्य में नारी विमर्श के सामाजिक पहलू परिलक्षित होते हैं। निम्न तरह से विविध शीर्षकों में देखा जा सकता है।

(अ) सामाजिक दृष्टि- प्रभा जी ने स्त्री की मानसिकता का उभारा है। मानवी समाज की दृष्टि में विवाह के बाद के संबंधों को हीन है। समाज में द्वेष, भाव, ईर्ष्या भाव व्याप्त है। समाज की देखने की प्रवृत्ति संकुचित है। समाज को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहला वर्ग धन सम्पन्न उच्च वर्ग है उनमें संवेदना नहीं के बराबर है और दूसरा वर्ग आम आदमी का है जो सामाजिक संबंधों का निर्वाह करता है। उनमें अपनेपन की भावना होती है। यह सीधा-सादा भोला-भाला वर्ग है। जिसे देखकर कवयित्री प्रसन्न रहती है-

तब मैं निकल पड़ती हूँ बाहर
फुटपाथ पर मूँगफली बेचने वाला
परिचय की मुस्कान देता है
और सामने यान वाले की दुकान पर
घरवाली का हाल पूछना
कहीं अधिक अपना लगता।¹³

रचनाकार मानवी समाज के प्रति प्रतिबद्ध रहता है यही प्रतिबद्धता उसके सुजन कार्य को प्रेरित करती रहती है। आम आदमी साहित्य का

केन्द्र बिन्दु प्रगतिवादी चिन्तन के कारण बना रहा। उसके प्रति संवेदनशील रचनाकारों ने उनमें जो अभाव है उसे अभिव्यक्त करने की शुरूवात की। प्रभा जी के शब्दों में 'अविराम युद्ध चल रहा है। भूख और रोटी के लिए।' आम आदमी दुःख-दर्द को सहते हुए भी आशावादी हैं। कवयित्री की कविता की शक्ति ऐसे ही समाज से प्रेरणा लेती हैं-

आँसू / सबके निकलते हैं।

पतझड़ के बाद बसन्त की आस / एक पूरी तैयारी
हम सबकी है/ इसलिए सफेद कागजों पर
स्याह लकीरों में उभरती कविता
सिर्फ लकीरों में उभरती कविता
सिर्फ मेरी नहीं / सबकी है॥

कवयित्री ने सामाजिक विषमता की ओर संकेत करते हुए धनवान व्यक्ति द्वारा गरीब व्यक्ति का शोषण का चित्रण किया है।

(आ) परिवार- माँ की वत्सलता परिवार के प्रति चिन्ता रहती है। पंडित विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में- "मेघों के बरसे, और माता के परसे ही तृप्ति मिलती है। माँ परसती है तो बेटे के आस्वाद में अपने आस्वाद को इतना मिला चुकी होती है कि वह अन्न नहीं परसती अपने मन का पूरा आस्वाद परसती है।"¹⁴

कवयित्री का मानना है कि माँ के स्नेह को स्पष्ट करने के लिए किसी साक्ष्य की आवश्यकता नहीं होती उसका स्नेह गर्म रोटियों की तरह सिका हुआ होता है। और बिस्तर की तरह बिल्कुल साफ। माँ का आशीष ही प्रेरणा एवं पाठेय रहता है-

पोपले मुँह में / तुम्हारी जीभ
धूमती है / कंकल अपने बच्चों को
आशीर्वाद देने।¹⁵

माँ अपनी संतान की प्रति चिन्तित एवं स्नेहमयी रहती है। वह हमेशा उसके स्वास्थ्य के प्रति सजग रहती है-

माँ ने कहा / बेटा बाहर मत जाओ
कल रात, पहाड़ों पर बर्फ / गिरी है,
ठण्ड लगेगा।¹⁶

कवयित्री ने घर में माँ के उदात्त एवं उदार आचरण का वर्णन करके माँ के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने की कोशिश की है।

(इ) नारी- प्रभा जी ने 'नियति' नामक कविता में नारी की स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। आज के आधुनिक युग में वह विज्ञापन के लिए एक वस्तु मात्र है। उसके अंग प्रदर्शन एवं मादक अदाएँ विज्ञापन के लिए जरूरी है। अर्थात् स्त्री शरमाना, संकुचित वृत्ती आदि भाव नष्ट हो रहे हैं। कवयित्री इसी सच्चाई को उजागर करती है कि वर्तमान में उसकी नियोन लाइट में जगमगाते हुए विज्ञापन की तरह हो गई है। स्त्री की दयनीय स्थिति प्रस्तुत है कि-

इतिहास और परम्परा से मुक्त / बिल्कुल ताजा
नई-नई रेखमी साझी पहन/ वह टैंग गयी
आशुनिकता के हँगर पर।¹

आधिक परिस्थितियों के अनुसार नारियों के जीवन क्रम में
इत्यात दिखाई देता है। दोपहर ताश खेलने में व्यतीत करने वाली
स्त्रियों के कई समूह एवं क्लब हैं। प्रभा जी की कविता 'नीली
का दिन' में नीली का अपना एक पल होता है। जहाँ वे ताश की
स्ट्रियों का आनंद ले रही हैं।

इक और ताश फैक्ट्री है / दूसरी ताश बॉट्टी है
हीसरी तिनके से / दौतों में कसा
फ़ज़ाइ निकलती है।²

कवियत्री ने कविता में स्त्री-जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त
इसे को कोशिश की है, विशेषता से उन्होंने नारी-शोषण को
विचित किया है। पुरुष की अहंकारी प्रवृत्ति में नारी को एकमात्र
तमस्ता है।

कवियत्री के काव्य में व्यक्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों
जो विवेचन निम्न तरह प्रस्तुत किया जा सकता है।

3. धार्मिक आयाम- भारत देश की स्त्रियों में धर्म के प्रति
विशेषतः निष्ठा एवं आस्था रहती है। वह जप-तप, भजन, पूजन,
उपजात, व्रत में मग्न रहकर ईश्वर के प्रति समर्पित भाव रखती है।
कवियत्री ईश्वर को ज्योतिर्मय मानकर यह निवेदन करना चाहती है-

प्रार्थना करती हूँ / तुमसे....ओ मेरे प्रभु।
मेरे खून के हर कतरे को / अपनी स्निध ज्योति में
स्नान करने दो / अपनी खुशबू भीतर तक
भर जाने दो।³

ईश्वर भक्ति में अवतारवाद की धारणा रही है। अवतार का
अर्थ है- अवतारण (जिसका अवतार होता है) जीवन के विशेष
आदर्शों को जनमानस के सामने रखने के लिए वे अवतरित होते हैं।
प्राचीनीता में लिखा है- 'जब-जब धर्म की गलानि होती है और
उसके फलस्वरूप अधर्म बढ़ता जाता है। तब धर्म के पुनरुत्थान
एवं अधर्म के विनाश के लिए ईश्वर अवतार होते हैं। कवियत्री ने
अपनी 'कृष्णधर्म मैं' इस सत्य को अभिव्यक्त किया है कि देवता
अवतार लेते हैं आम आदमी की तरह दुःख सहते हैं-

बार-बार बनकर /एक अदना आदमी
तुम्हें ही भोगना पड़ता / आदमी होने का दर्द।⁴
कवियत्री ईश्वर के प्रति समर्पित भाव से आत्मा-परमात्मा
का मेल करने हेतु उत्सुक है। अतः प्रार्थना करती है कि-
आओ कृष्ण मेरे पास आओ / जीवन की इस सर्विवेता में
चाहती हूँ तुम्हारा सानिध्य / चाहती हूँ तुम्हारा साथ।⁵

कवियत्री अपने काव्य में जहाँ ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति
बृक्ष निवृक्ष

भावा प्रस्तुत की है वहीं दूसरी ओर धर्म में फैले पाखंडी, उकोंसलों
पर तीव्र प्रहार किया है। धर्म के नाम पर पशुबलि देना कितना
न्यायसंगत है? भारतीय लोगों की यह धारणा है कि धर्म के अनुसार
हर प्राणी में ईश्वर है और दूसरी ओर पशुबलि देना तार्किक नहीं
लगता। इसलिए प्रभा जी कलकत्ता में काली के मंदिर में दी जा
रही पशुबलि से दुःखी है-

तीसरी आँखे से बोलती / माँ कांखी
भरेगा के वितरण का उत्सर्ग
खून का तिलक चमकता
हर ललाट पर /क्या होता
अगर / बेकटे के बदले
कसाई का सिर होता।⁶

4. सांस्कृतिक आयाम- संस्कृति से मनुष्य को विवेकता
और व्यवहार ज्ञान प्राप्त होता है। संस्कृति मनुष्य के जीवन एवं
समाज के जीवन में जीवंत मूल्यों, नैतिक आदर्शों को प्रतिष्ठापित
एवं परिमार्जित करती है। हर समाज एवं देश की अपनी संस्कृति
होती है। डॉ० मंगलदेव शास्त्री के मतानुसार- "किसी देश या
समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों में या सामाजिक संबंधों में
मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले उन आदर्शों की
समष्टि को ही 'संस्कृति' समझना चाहिए।"⁷

डॉ० कामिनी तिवारी के शब्दों में- "संस्कृति शब्द से
किसी भी देश के धर्म, परम्परा, रीति-रिवाज का बोध होता है।
साहित्य समाज से सम्पृक्त होता है। संस्कृति एवं समाज अन्योन्यात्रित
है संस्कृति किसी एक व्यक्ति की धाती नहीं है। इसमें संपूर्ण
समाज की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक विचारधाराएँ,
मान्यताएँ, विश्वास अंतर्निहित होते हैं।"⁸

भारतीय समाज में साध्य की प्राप्ति के लिए साधना ही
उच्चतम मानी गई है। कवियत्री ने 'साधना अच्छी लगती है,
समाधि नहीं, क्योंकि समाधि तक पहुँचते-पहुँचते सारे अनुभव
और प्रयास समाप्त हो जाते हैं। प्रभा जी 'ओ मेरे आत्मन्' में कर्म
को प्रधानता देती है। मानव जीवन में ध्येय प्राप्ति के लिए कर्म की
प्रेरणा महत्वपूर्ण मानी जाती है-

साधना के पथ पर / कर्म प्रवाहित रहे।⁹

संस्कृति में भारतीय लोगों को आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों
को अपनाने का मूल संदेश दिया है। मृत्यु आवश्यक है, इस सत्य
को हुए मनुष्य को अपने जीवन में उच्चतम कार्य करने चाहिए।

जीवन के जंगल में / जिसकी ध्वनि
स्पृदित होती / लकड़ी के रसे-रसे में।¹⁰

कवियत्री केवल मनुष्य के परिश्रम और प्रयत्न का गुणगान
नहीं करती है। अपितु स्वयं भी कर्मवाद को अपने जीवन में आत्मसात

करती है। कवयित्री शब्दों में- “मैं उनके कर्मों की साक्षी नहीं, उनमें से एक हूँ।” कर्म के प्रति विश्वास होना चाहिए तभी वह ‘चरैवति, चरैवति’ के संदेश को अपनाकर जीवन जी सकती है-

आज भी फैला है आस्था और विश्वास,
आज भी चलते हैं आदमी के
अभिमानी दो पाँव।”

कवयित्री की कविता ‘हुस्नाबानो’ की माँ अपने बेटे के विदेश से लौटने की राह देखती है। किन्तु जब उसे कोई उम्मीद दिखाई नहीं देती तब वह नियति के कठोर विधान को समझ जाती है।

काँपती हथेलियाँ
हो जाती उसकी तकदीर
सहसा
मलमल कर धोने लगती वह
लकीरों को
समझती हुई नियति को।”

प्रभा जी के ‘अहिल्या’ काव्य में अहिल्या के जीवन को शापित मानते हुए कवयित्री उससे सवाल पूछती है कि- “किस आकाश से टपकता वह दुर्देव?” निश्चित ही अहिल्या का इन्द्र के द्वारा छला जाना, पति गौतम का उसे शाप देना, नियति का विधान ही है। प्रभा जी का मानना है कि जब नारी अपने अस्तित्व एवं अपनी अस्मिता के प्रति जागृत रहेगी, तब एक नई संस्कृति की शुरूआत होगी जिसमें स्त्री रूढ़ियों, अयोग्य परम्पराओं से मुक्त होकर जीवन जीने योग्य, संस्कृति का निर्माण करेगी-

जब / अब तुम,
आँखें खोलोगी, अहिल्या / सच मानो, मेरी बहन
उसी वक्त खुलकर / खिलने लगेंगी
नई संस्कृति की पंखुड़ियाँ।”

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि कवयित्री के काव्य में सांस्कृतिक आयाम अत्यन्त अल्परूप में दृष्टिगत होता है। इसका कारण यह है कि उसके काव्य का कथ्य मूल यप से निजी संवेदना एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण है।

निष्कर्ष- कवयित्री द्वारा निरूपित नारी के संदर्भ में आर्थिक एवं सामाजिक आयामों और धार्मिक आयाम एवं सांस्कृतिक आयाम के अध्ययन, आकलन से कई निष्कर्ष निकलता है। प्रभा जी के काव्य में आर्थिक विवशता के कारण संघर्ष कर रही स्त्री है। हुस्ना अपने पिता की अख देश से लौटने की राह देखती है। क्योंकि उसे एक छोटा-सा मकान प्राप्त हो सके। रत्ना का काम की खोज में भटकना, डेढ़ सौ रुपये की नौकरी मिलने पर मकान मालकिन की डॉट-फटकार सुनकर भी अथक परिश्रम करते रहना यही स्त्री

जीवन की विवशता है। प्रभा जी ने नारी के अनेक रूपों में माँ का महत्व गहनता से चित्रित किया है। कवयित्री की नारी विषयक दृष्टि सूक्ष्म रही हैं। अतः स्त्री मन के विविध पहलुओं को चित्रित करने में कवयित्री सफल रही है।

संदर्भ

- प्रेमचन्द परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन- डॉ आशा बांगड़ी, पृ० 63
- गुखला की कड़ियाँ- महादेवी वर्मा, पृ० 92
- सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं- प्रभा खेतान, पृ० 25
- वही, पृ० 25
- हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ- प्रभा खेतान, पृ० 14
- वही, पृ० 17
- वही, पृ० 17
- हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ- प्रभा खेतान, पृ० 64
- प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श- डॉ कामिनी तिवारी, पृ० 57
- अग्निसंभवा (मई 1992, हंस/अंतिम किस्सा)- प्रभा खेतान, पृ० 56
- अपने अपने चेहरे- प्रभा खेतान, पृ० 10
- तमाल के झरोखे से- प० विद्यानिवास मिश्र, पृ० 139
- सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं- प्रभा खेतान, पृ० 51
- एक और आकाश की खोज मैं- प्रभा खेतान, पृ० 39
- सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं- प्रभा खेतान, पृ० 26
- वही, पृ० 33
- वही, पृ० 67
- कृष्णा धर्मा मैं- प्रभा खेतान, पृ० 14
- वही, पृ० 45
- वही, पृ० 51
- भारतीय संस्कृति का विकास- डॉ मंगलदेव शास्त्री, पृ० 4
- प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श- डॉ कामिनी तिवारी, पृ० 226
- सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं- प्रभा खेतान, पृ० 58
- एक और आकाश की खोज मैं- प्रभा खेतान, पृ० 2
- वही, पृ० 37
- हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ- प्रभा खेतान, पृ० 10
- अहिल्या- प्रभा खेतान, पृ० 72

शोधछात्र, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय
जलगांव, महाराष्ट्र